तृतीय अध्याय

प्रबन्ध का शैली पक्ष

प्रबन्ध का शैली पक्ष :

भाषा

लगभग संपूर्ण बुन्देलखण्ड में कारसदेव की पूजा होती है। भक्तों की संख्या में अर्धशिक्षित या अशिक्षित प्रमुख रूप से हैं। शहरों और बड़े-बड़े कस्बों की अपेक्षाकृत गांवों में गायन और पूजा की अधिकता है। 'कारसदेव की गोटें : लोकिक और काव्य' का गायन 'बुन्देली' भाषा में होता है। बुन्देली को बुंदेलखण्ड क्षेत्र के कारण 'बुन्देलखण्डी' भी कहते हैं। बुन्देलखण्ड प्रदेश बुन्देल राजपूतों की प्रधानता के कारण कहलाया। ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के अनुसार इसके बोलने वालों की संख्या लगभग ६८६९२०१ थी।

बुंदेली शुद्ध रूप में झांसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भूपाल, ओरछा, सागर, नृसिंह पुर, सिवनी तथा होशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित मिश्रित आगरा, दतिया, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा नागपुर आदि में प्रचलित हैं। इस प्रकार यह बोली दक्षिणी-पश्चिमी उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश के मध्यभाग तथा बम्बई के नागपुर के पास के उत्तरी-पूर्वी भाग में प्रयुक्त होती है, और इसका क्षेत्र पूर्वी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी तथा मराठी के बीच में है। बुन्देल बुन्देली का परिनिष्ठित रूप ओरछा और सागर के आस-पास बोला जाता है और इसके बोलने वालों की संख्या ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के अनुसार लगभग ३५१६७२६ थी।

बुंदेली में लोक-साहित्य की प्रचुरता है यद्यपि इस पर केवल वैज्ञानिक रूप से कार्य किसी ने नहीं किया है। बुन्देली क्षेत्र के अन्य कवि ब्रजभाषा का ही प्रयोग साहित्य-सृजन में करते रहे हैं। लाल कवि की 'छत्र-प्रकाश' ही एकमात्र बुन्देली में रचा गया साहित्यिक ग्रन्थ है। केशव और पद्माकर की ब्रजभाषा बुन्देली से अवश्य प्रभावित है।

ध्वनि और व्याकरण

ध्वनियां

बुन्देली में दस स्वर हैं -- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। ऐ और औ कभी तो मूल स्वर के रूप में :ऍ, ऑ: आते हैं, और कभी संयुक्त :अइ, अउ: स्वर रूप में। सभी स्वरों के अनुनासिक रूप भी मिलते हैं : अंड़ना :सांड़:, रांड़ :विधवा:, गुइंयां :साथिन:, ईंधन, कुंआं, ऊंठा :अंगूठा:, मैंट, मैंसिया :भैंस:, न्यों :नाखून:, पौंद। दीर्घ स्वर आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के ह्रस्व रूप भी अटरिया :बुनौना:, ओरका :अवाव:, औ, ~~औ-के-ह्रस्व-~~ भौवाय :भवानी: आदि प्रयुक्त होते हैं। ए का ह्रस्व इ :बेटी-बिटिया: तथा ओ का ह्रस्व उर :घोरो -घुरवा: रूप भी मिलता है। बुन्देली में प्रयुक्त होने वाले व्यंजन ये हैं -- क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ, च, छ, ज, झ, ङ, ञ, न, न्ह, म, म्ह, र, र्ह, ल, ल्ह, ड़, ढ़, य, व, स, ह।

महाप्राण ध्वनियों में अल्पप्राण होने की प्रवृत्ति है, विशेषतः अनादि स्थिति में भूंक :भूंख:, हांत :हाथ:, पीब :पीप:, दूद :दूध: । यह प्रवृत्ति घोषों में अपेक्षाकृत अधिक है।

परसर्ग

कर्ता	--	नें, नैं, ने, न्हें।
कर्म सम्प्रदान	--	कों, खों, खां, कें, कुं, कों।
करण-अपादान	--	सें, सें, से, सों।
सम्बन्ध	--	को, की, के, खो, खी, खे, खें।
अधिकरण	--	पे, पैं, मे, पे, पै, म्हें, लों।

संयुक्त परसर्ग भी प्रयुक्त होते हैं : के लानें :के लिये: , खे लानें :के लिये:, के सातिर :के साथ: । करण-कारक में न विभक्ति :भुखन मरो :-- भूख से मरा: का प्रयोग भी मिलता है। "न्हें, खो, खी, खे, खें तथा म्हें प्रायः सर्वनामों के

के साथ आते हैं। कर्म कारकीय परसर्ग `कों` मुरैना, भिंड, झांसी, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी आदि में; `खों` गुना, विदिशा, रायसेन, सागर आदि में; `खां`, हमीरपुर, छतरपुर, पन्ना तथा दमोह आदि में; `कुं` तथा `कों`, छिंदवाड़ा, सिवनी में तथा `खं` बैतूल में प्रयुक्त होते हैं।

कारक रूप

व्यंजनांत पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
अविकारी	सांप	सांप
विकारी	सांप	सांपन्

आकारान्त :कुआ, मउआ:, ईकारान्त :नाती, धोबी:, ऊकारान्त :डांकू: तथा एकारान्त :चौबे, दुबे: शब्दों के रूप भी इसी प्रकार चलते हैं।

ओकारान्त पुल्लिंग	एक०	बहु०
अविकारी	घोरो	घोरे
विकारी	घोरे	घोरन्

`घोरन्` के स्थान पर `घोरेन्` भी मिलता है। ओकारान्त संज्ञाओं :तारो, पेड़ो: के रूप भी प्राय: इसी प्रकार चलते हैं। सम्बन्ध-बोधक दद्दा, कक्का, मन्ना, मम्मा, आदि शब्दों के रूप अन्य प्रकार से चलते हैं। इनके एकवचन के दोनों :विकारी, अविकारी: रूप `दद्दा`,`कक्का` आदि ही रहते हैं। बहुवचन में अविकारी रूप में `हर्` तथा विकारी में `हरन` जोड़ते हैं: `मम्मा हर्` :मामा लोग:, `कक्का हरन` :पिता लोग:।

व्यंजनांत स्त्रीलिंग		
अविकारी	रात	रातें
विकारी	रात	रातन

इन अन्त्य स्त्रीलिंग शब्दों :कुम्हारिन, लुहारिन, मालिन: के रूप भी ऐसे ही चलते हैं। अन्य सभी स्त्रीलिंग शब्दों के रूप प्राय: निम्न- निम्नांकित रूप में चलते हैं:--

अन्य सभी स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
अविकारी	कुरती	कुरतीं
विकारी	कुरती	कुरतिन, कुरतियन

अनेक संज्ञाओं के तीन रूप उपलब्ध हैं :-

ह्रस्व	दीर्घ	अतिरिक्त दीर्घ
लड्डू	लडुआ	लडुअवा
कवार	कवरा	कवरवा

दीर्घ रूप प्रायः हेयार्थी होता है, तथा अतिरिक्त दीर्घ अतिरिक्त हेयार्थी। सभी शब्दों के तीनों रूप नहीं होते : घोरी-घुरवा, बेटी-बिटियां, चिरई-चिरइया आदि।

स्त्री प्रत्यय- स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्रयुक्त प्रमुख प्रत्यय न :काछी-काछिन:, :नाऊ-नाऊन:, -नी :तेली-तेलनी:, -इन :सुनार-सुनारिन:, -आनी :जेठ-जिठानी: तथा -ई :बाबा-बाबी, काका-काकी: हैं।

सर्वनाम-

पुरुष वाचक	एकवचन	बहुवचन
अविकारी	मैं, मैं, हम	हम, हमलोग
विकारी	मो	हम, हमलोगन
संबंध	मोरी :रे,-री:	हमारी :-रे,-री :
	मोवो :-वे,-ई:	हमावो :-वे,-ई :
	मेरो, मोनो, मोको	हमको

मध्यम पुरुष

अविकारी	तू, तूं, तें, तैं, तुम	तुम, तुमलोग
विकारी	तो	तुम, तुमलोगन

मध्यम पुरुष	एकवचन	बहुवचन
संबंध	तोरो :-रे,-री:	तुमारो :-रे,-री:
	तोबो :-ए,-ई :	तुमाबो :-ए,-ई :
	तेरो, तोको, तोनो	तुम्हो

अन्य पुरुष : निश्चयवाचक :दूरवर्ती:

अविकारी	वो, वो :पुल्लिंग:, वा :स्त्री०:	ऊं, वो, वो, वे, बे, वे
विकारी	उन, ऊं, वा :स्त्री०:	विन, उन
सम्बन्ध	वाको :-के, -की:, वोको	

:संप्रदान में 'उये' :एकवचन: तथा 'उन्हें' :बहुवचन: भी प्रयुक्त होते हैं।:

निश्चयवाची :निकटवर्ती:

अविकारी	यो :पु०:, या :स्त्री०:, यो, ए	ये, ये
विकारी	ई, इ,	इन, ए, ए

:संप्रदान में एकवचन में 'इये' तथा बहुवचन में 'इन्हें' भी आते हैं। :

सम्बन्धवाचक

अविकारी	जो, जौन	जो, जौन
विकारी	जी	जिन

नित्य संबंधी

अविकारी	सो, तौन	तौन
विकारी	ती	तिन

:संप्रदान में जिये, तिये, जिन्हें, तिन्हें भी आते हैं। :

प्रश्नवाचक

:कौन:	अविकारी	को, कौन	को, कौन, को-को, कौन-कौन
	विकारी	की, कौन	किन

:संप्रदान में किये, कौनें भी आते हैं: ।

:क्या:	अविकारी	का	का, का-का
	विकारी	काये	काये, काये-काये

':किसी' के लिये काऊ, कोऊ, कोऊं, कोन्हउं का प्रयोग होता है :।

अनिश्चयवाचक

:कोई:	अविकारी	कोऊ, कोउ	कोऊ
	विकारी	काउ	काउ
:कुछ:	अविकारी	कछु	कछु
	विकारी	कछु	कछु

:जो कोई' के लिए 'जुकोउ', तथा 'कोई-कोई' के लिये 'कोउ-कोउ' आते हैं।:

निजवाचक

अपुन, अपन, आपक- आप का प्रयोग होता है। विकारी में अपने :अपने हीं: आता है। वक्ता-श्रोता दोनों को समाविष्ट करने के लिये 'अपुन-अपुन' तथा 'आप ही आप' के लिए 'आपइं-आप' या 'अपनइं-आप' आते हैं।

संख्यावाचक विशेषण

एक से लेकर बीस तक के शब्द प्रायः हिन्दी जैसे ही हैं। केवल कुछ अलग हैं, जैसे छ, गा, गेरा, बारा, तेरा, चउदा, पन्द्रा, सोरा, सत्रा, अठारा, उन्नईस। बीस के ऊपर प्रायः 'कोड़ी' से गणना होती है -- दो कोड़ी =४०। अब प्रायः 'कोड़ी- २० के ऊपर भी अलग-अलग संख्याओं का प्रयोग होने लगा है। ये प्रायः हिन्दी जैसे ही हैं। कुछ विशेष उच्चारण हैं --

एक्कइस, छब्बीस, पइंतिस, पइंतालिस, सउ। क्रम संख्यावाचक -- पैलो, पहलो, दूसरो, चौथो, पांचवां आदि, अपूर्ण संख्यावाचक - आधो, पाव, चौथाई, चौथ-याई, तिहाई, पौन, सवा, सवाओ, अढ़ाई, डेढ़।

'गुना' के लिये 'गनो' :दुगनो, पंचगनो: आता है।

सार्वनामिक विशेषण इतना-- इतो, इत्तो, इतनो। उतना - उतो, उत्तो,

उतनौ । जितना-- जितो, जितौ, जितनौ । कितना -- कितो, कितौ, कितनौ । ऐसा-- ऐसौ । वैसा -- वैसौ । जैसा -- जैसौ । कैसा -- कैसौ । कितने- कै, कितने । जितने -- जै, जितने । इतने -- इतने, इचे, इचे । उतने -- उतने,उचे,उचे ।

कृदन्त

:१: वर्तमानकालिक :-- तु :लिखतु: करतु : । :२: भूतकालिक :- यौ :गयौ, मारौ: । :३: पूर्वकालिक -- के, कैं, कैं :दौरकें, मारके, लिखलिखाकें: कभी-कभी केवल धातु का भी पूर्वकालिक रूप में प्रयोग सुना जाता है -- निकर्, सुनु, चढ़ आदि । :४: क्रियार्थक संज्ञा -- न :जानै, खानै, सब मारनै: तथा बौ :मारबौ: ।

सहायक तथा अस्तित्ववाचक क्रिया

वर्तमान :मैं हूं: - इसके तीन रूप हैं :-

:१:	उत्तम पुरुष	हों, औं, हौं, औं	हैं, एं, हैं, एं
	मध्यम पुरुष	है, ऐ, है, ए	हो, औ, हो, औ
	अन्य पुरुष	है, ऐ,	हैं, ऐं ।
:२:	उत्तम पुरुष	आंय, आंउ	आंयु
	मध्यम पुरुष	आयु	आयु
	अन्य पुरुष	आयु	आंयु
:३:	उत्तम पुरुष	आंवों	आंवें
	मध्यम पुरुष	आवे	आवो
	अन्य पुरुष	आवे	आवें

भूत निश्चयार्थ :मैं था आदि:

	पुल्लिंग		स्त्री लिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हतो, तो	हते, ते	हती,ती	हतीं, तीं
मध्यम पुरुष	हतो, तो	हते, ते	हती, ती	हतीं, तीं
अन्य पुरुष	हतो, तो	हते, ते	हती,ती	हतीं, तीं

भविष्य निश्चयार्थ : मैं हूंगा या होऊंगा आदि:

	पुल्लिंग		स्त्री लिंग	
	एक०	बहु०	एक०	बहु०
उ०पु०	हुवाँ, होऊंगा	हुवें, होयेंगे	हुवाँ, होऊंगी	हुवें, होयेंगी
म०पु०	हुवू, होउगो	हुवें, होउगे	हुवे, होउगी	हुवाँ, होउंगी
अन्य०	हुवे, होउगो	हुवें, होयेंगे	हुवे, होउगी	हुवें, होयेंगी

आज्ञा	एकवचन	बहुवचन
उ०पु०	होऊं, होउवाँ	होवें, हाँ
म०पु०	हो	हो, होवो
अन्य पु०	हो, होवे	हों, होवें

भूत संभावनार्थ

उ०पु०	होतो	होते
म०पु०	होतो	होते
अन्य पु०	होतो	होते

प्रेरणार्थक

धातु में 'आ' जोड़ कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'वा' जोड़ कर द्वितीय प्रेरणार्थक बनाते हैं -- चल - चला - चलवा, चल् - चला - चल्वा ।

कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य बनाने के लिये 'जा' धातु का प्रयोग करते हैं :--

कुवारी :पुड़ी: खाई जा रई ।

सामान्य वर्तमान

मैं चलतु :हौं:	हम चलतु :हैं:
तैं चलतु :है:	तुम चलतु :हौ:
वो चलतु :है:	वे चलतु :हैं:

अपूर्ण वर्तमान

मैं चलु रयौ :हौं:	हम चलु रए :हैं:
तैं चलु रयौ :है:	तुम चलु रए :हौ:
वो चलु रयौ :है:	वे चलु रए :हैं:

आज्ञा

	मैं चलौं	हम चलैं
	तैं चल	तुम चलौ
	वो चलै	वे चलैं
आदरार्थ	आप चलौ	आप लोग चलैं

सामान्य भूत

मैं चलौ	हम चले
तैं चलौ	तुम चले
वो चलौ	वे चले

आसन्न भूत

मैं चलौ हौं	हम चले हैं
तैं चलौ है	तुम चले हौ
वो चलौ है	वे चले हैं

पूर्ण भूत

मैं चलौ तौ	हम चले ते
तैं चलौ तौ	तुम चले ते
वो चलौ तौ	वे चले ते

सम्भावात्मक भूत

मैं चलतु तौ	हम चलतु ते
तैं चलतु तौ	तुम चलतु ते
वो चलतु तौ	वे चलतु ते

अपूर्ण भूत

मैं चलु रवौ तौ	हम चलु रए ते
तैं चलु रवौ तौ	तुम चलु रए ते
वो चलु रवौ तौ	वे चलु रए ते

संदिग्ध भूत

मैं चलौ हुवौं, हुवौं	हम चले हुएं :हुवें:
तै चलौ हुए	तुम चले हुवौ

हेतुहेतुमद्भूत

:जो: मैं चलतौ	हम् चलते
:जो: तैं चलतौ	तुम् चलते
:जो: वो चलतौ	वे चलते

पूर्णक्रिय संभावनार्थ

मैं चलौ होवौ	हम चले होवे
तैं चलौ होवौ	तुम चले होवे
वो चलौ होवौ	वे चले होवे

अपूर्णक्रिय संभावनार्थ

मैं चलतु हो तौ	हम् चलत् होवे
तैं चलत् हो तौ	तुम चलतु होवे
वो चलतु हो तौ	वे चलतु होवे

पूर्ण भूत संभवनार्थ

मैं चलो होऊं	हम् चले होएं
तैं चलो होय	तुम् चले होव्
वो चलो होय	वे चले होंय

सामान्य भविष्य

:चौ: मैं चलौं, चलवौं	हम् चलैं, चल हैं
तैं चले, चल है	तुम चलौ, चल हौ
वे चलैं, चल है	वे चलैं, चलहैं

संभाव्य भविष्य

:चौ: मैं चलौं	हम् चलैं
तैं चले	तुम् चलौ
वो चले	वे चलैं
आप चलैं	आप लोग चलैं

भविष्य आज्ञार्थ

तैं चलिए	तुम चलियौ
आपु चलियौ	आप लोग चलियौ

अपूर्ण भविष्य निश्चयार्थ

मैं चलत् हुवौं	हम् चलत् हुएं
तैं चलत् हुए	तुम् चलत् हुवौ
वो चलत् हुए	वे चलत् हुएं

भविष्य संभावनार्थ

मैं चलत होऊं २	हम् चलत् होएं
तैं चलत होए	तुम् चलत् होएं
वो चलत होए	वे चलत् होएं

क्रिया विशेषण

यहां -- यां, यांई, इते, इतइ, मां; वहां -- वां, वांई, उते, उतई, मां;
जहां -- ज्यां, जां, ज्यांई, जिते, जितइ; तहां -- तां, त्यां, त्यांई, तिते, तितई;
कहां -- कां, क्यां, क्यांई, किते, कितइ आदि ।

उप-बोलियां

बुन्देली की बोलियों में प्रमुख पंवारी, लोधांती, खटोला, भदावरी, रघोबंसिया तथा किनार की बोली है। इसके क्षेत्र के उत्तरी पूर्वी भागों में कुछ मिश्रित ;ब्रज तथा बघेली की सीमाओं पर, उनसे प्रभावित: उप-बोलियां हैं, जिनमें बनाफरी, कुंडरी, तिरहारी, निभट्टा उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार दक्षिण में भी इसके बहुत से भाषी मिश्रित रूप हैं, जिनमें लोधी, कुंबी-छिंदवाड़ा, कोष्टी, कुम्हारी तथा नागपुरी हिन्दी प्रधान हैं। उनमें छिंदवाड़ा, बुन्देली के कई स्थानीय रूप हैं।

बुन्देली में भाषागत विशेषतायें बहुत कम हैं। इसके अपने क्षेत्र में प्रायः एक प्रकार की ही भाषा प्रचलित है और इसकी उपशाखाओं में कतिपय स्थानीय विभिन्नताओं के अतिरिक्त अन्य कोई विशेषता नहीं है।

प्रस्तुत लोक काव्य की भाषा 'लोधान्ती' है। राठ परगना के आधार पर इसे 'राठौरा', 'राठौरी' या 'राठी' भी कहते हैं। इस लोक काव्य को राठ के समीप गायन और पुना के प्रसिद्ध क्षेत्र डकैरा और राठ के अन्य से निवासियों ने गाया है जो इस बोली के सिवा और दूसरी कोई भी बोली बोलना नहीं जानते हैं।

--0--

शैली

:ख: गीतात्मकता

प्रस्तुत लोक काव्य की शैली का रूप गायन की तरह साधारण और परम्परागत है। किसी भी भाव को घुमा-फिरा कर या बना कर कहने की अपेक्षा सीधे-सादे रूप में कह दिया गया है। हक्लादी के हाथी पछाड़ने से लेकर राजा गरुड़कूटा के द्वारा हक्लादी के पिता को अपने पुत्र से विवाह की स्वीकृति के लिए विवश करना, हक्लादी का मामा जी के राज्य में शरण लेना, अपमान के प्रतिकार के लिए शिव को तप द्वारा प्रसन्न करा कर उन्हीं जैसे दो भाइयों की प्राप्ति, भूरेन द्वारा राजा गरुड़कूटा और उसके दामाद को परास्त करना, प्रायश्चित्त के लिए हिमालय में तप करना, और शिव के दरबार में स्थान प्राप्त करने से मान्धी के विवाह कार्य तक संपन्न करने तक का वर्णन बहुत ही सरल, सीधा-सादा और संक्षिप्त है। मिट्टी के घोड़े में प्राण-संचार करना, मालिन का गर्व-भंग, सर्प दंश प्रसंग, गरुड़कूटा की पुत्री का कटु वचनों द्वारा पति को युद्ध के लिए विवश करने में अवश्य विस्तार है।

मुक्त छन्द में रचित इस काव्य में शैली की दृष्टि से कोई विशेष विशेषता नहीं है, भव्यता के स्थान पर सादगी, शब्द-अर्थ के चमत्कार के स्थान पर सरलता, कल्पना की ऊंची उड़ान के स्थान पर यथार्थ, आडम्बरहीनता, अनलंकृतता, स्वच्छता प्रधान्य है। वास्तव में ग्राम्य-जीवन की सरसता, सरलता, स्वच्छन्दता ही प्रस्तुत लोक काव्य की शैली है। घटनाओं में चमत्कार अवतारवाद के कारण है। विषय के अनुकूल सरल भाषा प्रयुक्त हुई है जो भाव और अर्थ को सहज रूप में स्पष्ट कर देती है, कहीं भी समझने में कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती है। किसी भी प्रसंग या अंश को जान-बूझकर क्लिष्ट या कृत्रिम बनाने की चेष्टा नहीं की गई है। विषय की गुरुता के कारण गम्भीरता प्रधान्य है किन्तु अवसर मिलने पर हास्य-विनोद को भी उचित स्थान दिया गया है। नीरसता का सर्वथा अभाव है।

अवतारवाद के कारण चमत्कार अनेकों स्थान पर हैं फिर भी ढोंगियों आदि की खिल्ली उड़ाई गयी है। इसी ढंग प्रसंग में जन-सामान्य में व्याप्त कन-फड़े जादूगर, सपेरों के विष-निवारण सम्बन्धी धारणा की खिल्ली उड़ाई है।

कथानक में मुख्य रूप से दो बातें हैं - नारद देव का एकादशी के अपमान का बदला लेना और प्रायश्चित। सम्पूर्ण काव्य इसी से सम्बन्धित बातों पर केन्द्रीभूत रहता है।

क्योंकि इसमें मुख्य बात एकादशी के अपमान के प्रतिकार के लिए नारददेव का राजा गरुड़ध्वज को परास्त करना है अतः वीर रस और ओजस्विता, शब्दों में तोड़-फोड़, परिवर्तन की अपेक्षा करना उपयुक्त है किन्तु सम्पूर्ण इस लोक-काव्य में वीर रस का उद्रेक लगभग शून्य सा है, मात्र :४६-४२।पृष्ठ: सुरपाल द्वारा पशु मोहित करने के बाद, ग्वालों की फरियाद पर राजा गरुड़ध्वज का सेना के साथ युद्ध के लिए आते समय वीर रस का आभास सा होता है -

हां हां जब नजर पड़त गई राजा की कढ़िये भरे दरबार
हां हां राजन कोजन हाथ करी राजन ने तैयारा हो
हां हां सब सज गये डेरा बन के चहेरा रे भवन के द्वार
हां हां लगत आवें फौजें से कढ़िये मांझेदार
अरे पथरा पुर अखरा हो गये अखरा मुड़ भये वीर अगिन की झुर
उड़ा कर धुरा आसमान में जावे सूरज भये अलोप
हो जावे भैर सूरमा हो गई सी अंधेरी रात.....

फिर तत्काल ही सुरपाल के चमत्कार से मोती वर्षा होती है और फौजें बिना युद्ध किये ही लौट आती हैं, बिना किसी खून-खराबी के राजा गरुड़ध्वज की हार हो जाती है और वीर रस के स्थान पर अद्भुत रस उत्पन्न हो जाता है।

इसी प्रकार हरियाने में सूरा जाट के साथ छोटे से युद्ध की पीठिका बनती है -- :५४: २७:

'हां हां अरे आंख ललामी पड़ गई फड़कन लगे भुज के भारा है
ओरी रम्भिया ऐसी बातें जिन करिये तुमें कही न जाये
हां हां अरे जान न पावे घोड़े वालो गंगा पारा है
घोरेवाले की चोरी से हां रे छिपाय
हां हां अरे मार भगावों इन घड़ियां में सागर पारा है'''२८:

कि तत्काल शूरपाल के चमत्कार से पूरा भाट वर्णित सेना भेड़-बकरी बन जाती है, और अद्भुत रस प्रभावशाली हो जाता है।

मात्र इन दो अत्यन्त लघु प्रसंगों के अलावा अन्य वीरता पूर्ण कृत्यों का लगभग अभाव है, और इन प्रसंगों में भी प्रवृत्ति चमत्कारपूर्ण अहिंसात्मक युद्ध की है।

यद्यपि प्रस्तुत लोक-काव्य नितान्त ग्राम्य पृष्ठभूमि पर आधारित है, फिर भी ग्राम्य जीवन, प्रकृति-चित्रण, पारिवारिक संबन्ध, ऋतु-वर्णन, सामाजिक, धार्मिक उत्सव, रीति-रिवाजों के प्रति सर्वथा उदासीनता है।

वीर रस के साथ, शृंगार, रौद्र, वीभत्स और भयानक रस का सर्वथा अभाव है।

शान्त रस मुख्य रूप से प्रधान है, सम्पूर्ण लोक-काव्य लगभग इसी रस में है। एक-एक स्थलों में हास्य और करुणरस की सुन्दर योजना हुई है।

मायके की गायों को शूरपाल के साथ देख कर राजा गढ़गढ़हा की पुत्री के मन में शंका और युद्ध के लिए अनिच्छुक पति को ताने देकर युद्ध प्रेरित करने में हास्य-व्यंग की सुन्दर सृष्टि हुई है -

'हां अरे काहे के ताने पीयरे तुमने धरे मरद अवतार है
हां अरे काहे के ताने संग रीझन पे तुमने अभा लई क्षुर की लागा है
बेरपई के ताने तुमने मनाये माता के मतुम्भिया दोष
हो अरे मेरो मन भर गयो भैया घोरे वाले के साथ है
ओरे पीयरे घोड़े वालो मेरे मन बस जाये
हां अरे जाऊं मैं घोरा वाला के संगई भाया है ..

वोरे पीछरे वोरी गलन-मलन करी भारी रे बदनामी
हां अरे सब मांयरे मैंने छोड़े बरयाने गांवा है
जाये मैं अपनी बहुला की डाळों चोरी रे गाय
हां अरे मैं चोरी के पीछरे टारों गोबर की ढेला है :५१-५२:
.....हां अरे काये के वाने तुमने धरे अवतारा है
मुझरा के पुतरिया होवे भेड़ां डाढ़े देवी ब्यार
हां अरे पीछरे मैया मैं रखी सलोनी काया है
मैं औरे देवी कन्या रे दान
अरे पीछरे तुमया मैं पहनावी चुरियां हरियल कांचा की
होला पीछरे मैं झुकी कन्या रे गा
हां होवे पीछरे मैं भेंट करवी किया छिरोरा है
होवा छुरियाक मैं धरती रे बैठाये......... :५३:२८:

अद्भुत रस की योजना अनेक स्थानों पर हुई है - कारख देव मांझेदार में बहिन से भेंट करने के लिए खड़े हैं। बहिन अपनी सहेलियों के साथ मिलने आती है। सहेलियों के सम्भावायें उनके पास कुछ भी नहीं था, ऐसी विषम परिस्थिति में चमत्कार से सोने की वर्षा करके स्थिति की रक्षा करते हैं -

.....आवे मैं भेंट कर आऊं बीरन कों मांझेदारा है... :७०:
......हां सबरी अखियन बरसत जा रई नैनन के बोरा है :७५:४१:
.......चारे कन्या धोरी सों उपर करे बनाय
हां हमारी गांठन नइयां पैसा धेले दामा है
जाके फिके रावों रे मान गुमान..... :७९:
....हां अचाधारी ने कंचन बरसा दये मांझेदारा है... :८२:४१:

करुण रस का उद्रेक, रतनावती के बहुत आग्रह करने पर भी, तप के लिए भाइयों के छल-बल से हिमालय को जाने पर होता है। रतनावती के माता-पिता शेष नहीं हैं,

परिस्थितियों के कारण पति, गांव, सम्बन्धी सभी लोग बिछुड़ गये हैं। ऐसी स्थिति में जहां एक ओर स्नेही भाइयों के बिछोह का वियोग है तो दूसरी ओर बेटी चम्पावती के ब्याह की चिन्ता है, विशेषतया इसस्थिति में जब गांव-टोले में लोग-बाग उसे 'अभागन' कह कर शरण देने से इन्कार करते हैं और सम्मान करना छोड़ देते हैं। सखावती विलाप करती फिरती है, कभी वह बेटी को कोसती है, तो कभी वह नीम और पर्वत से भाइयों के छिपा लेने की शंका में क्रुद्ध होती है और भग्न हृदय से लोगों की कड़ी बातें सहन करती है -

'अरे बैन मे ठाढ़े लोटा पटकै पटकन मारे बिलापा हो
अरे विधाता या कैसे माँ का रचो दीनन के ब्याह
आज अलबलिया अब कर गये मोखां मांझधारा है
ओरी बिटिया तैं मर जाती तौ पै परती सबरवा रे गाज
औरे माय को मैं होती जनम हां बांझा है
तैने कैसे लीला की छोड़ी ! बचली रे मांग.....' :९०-९१:४५:
'रोवत जावे बिटिया डीमरे ओर.......' :९१:४६:
'ओरी निबुरिया तैं पाठै पै जमीं थी दो दो जाना है
ओरी निबुरिया तोखां लीला के धर ताये अरारी तैं
मैंने तोखा नगिचारे के पिवा दे निबुरिया दूधा है
आज तैने भइया कड़ा दये अपनी रे ओर
दे दौं सरायें निबुरिया तैं हो जावे पतउवा झारा हो'.. :९१-९२:४६:
'ओरी पहरिया तोखा शिव की देन कौं के सराप
तैने मेरे भइया छिपाल्ये अपनी ओट
अरे दे देऊं सरापे पहरिया बह जावे जैसे नीर की धारा हो' :९२-९३:४८:
'अरे रोवन लगी बेटी उन घड़ियां डीमरे ओरा हो
अरे तब पंछी का बैन के आ गये मोच'......... :९४७:
'जब बेटी देखा वन पहुंची रे हरियल टोड़ा झांझ
'जब झांझ के भइया के नजरें बैन पे पर जाता हो

बारे की अनागम चिटिया उगरत आवै हमारे दुवार
फांक के हुकुम से लगा लये वजड़ के किवाड़
छौरन छौरन चिटिया बिलखत फिरे टेरत आवे गैवरी अमाया की
बेटी का उघर नइ देवें हरियल फांक
हां फांक में दैना पानी की पतरी हो गयी टोड़ा फांक की' :१४१०:

इसमें काफी भावपूर्ण करुण रस की व्यंजना हुई है। एकलादी के अत्यन्त वृद्ध माता-पिता के दो शिशुओं के जन्म से रहस्य के साथ कौतूहल भी होता है किन्तु जनसाधारण में व्याप्त शिव की दानशीलता के कारण अलौकिकता और श्रद्धा की प्रधानता है।

कुछेक स्थलों को छोड़ कर मार्मिक भावों की भी उपेक्षा है। यह बात उस समय काफी खटकती है जब गुरली से सुरपाल के सर्प दंशित होने का समाचार सुन कर एकलादी दुःख करने के बजाये कारस को सुख-निद्रा से भी जगाने में डरती है।

कहावतें भी बहुत-बहुत कम प्रयुक्त हुए हैं।

सुखपूर्ण निद्रा के हेतु लगभग सभी पात्र विशेष प्रिय हैं - सुरपाल, भूरा जाट, कारस, सर्प आदि सभी इस आनन्द के विशेष प्रेमी हैं।

कथन में चेतनत्वारोप निम्न रूप में है। कारसदेव मिट्टी के घोड़े में सजीवता उत्पन्न करते हैं, नीम और पहाड़ी को एकलादी भला-बुरा कहती है और वे अपनी अपनी सफाई देती हैं।

--- ० ---